वीर संवत २४९२, माघ कृष्णपक्ष ११, बुधवार

दि.१६-२-१९६६, गाथा ७, ८, प्रवचन नं.-२७

एक पुद्गल परावर्तन में तो अनन्त तीर्थंकर अनन्त हो जाये। ऐसे असंख्य पुद्गल परावर्तन तो एकेन्द्रिय में जीव रहता है। इससे दो इन्द्रिय,तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय पाना महादुर्लभ है। उसमें भी मनुष्यपना और उसमें भी उत्तम कुल, उसमें भी जिनवाणी का सुनना, वह तो उत्तरोत्तर बहुत दुर्लभ, बहुत दुर्लभ (है)। दृष्टान्त दिया न ? सुमणि हाथ में आया और रत्न समुद्र में डूबा दिया। ऐसे ऐसे साधन मिले, यदि उसमें सम्यग्ज्ञान नहीं किया तो जन्म-मरण के चक्कर ऐसे ही करने पड़ेगे। अनन्त बार किये ऐसे करने पडेंगे। सम्यग्ज्ञान जब तक न किया... वही कहा न ?'**आपो लख लीजे**' ये आया था।

तातैं जिनवर-कथित तत्त्व अभ्यास करीजे;
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपो लख लीजे।
यह मानुष पर्याय, सुकुल, सुनिवौ जिनवानी;
इह विध गये न मिले सुमणि ज्यौं उदधि समानी।।६।।

भगवान आत्मा...उसका सातवीं गाथा में स्पष्टीकरण करेंगे। ज्ञानस्वरूपआत्मा है, उसमें पुण्य-पाप राग उठता है, वह भी अपने स्वरूप में नहीं। समझ में आया ? शरीर, वाणी, मन तो जड़ है, पर है और पुण्य-पाप का शुभ-अशुभभाव है, वह आस्रवतत्त्व है। उसमें अपना (स्वरूप) भिन्न '**लख लीजै**' ऐसा 'दौलतरामजी' ने कहा। वह तो शास्त्र ऐसा कहते हैं, वैसा हिन्दी भाषा में बनाया है। '**आपो लख लीजे**' यह आत्मा आनन्दकन्द जिनेन्द्रकन्द आत्मा है। समझ में आया ?

आत्मा अर्थात् अतीन्द्रय आनन्द का कन्द है। सूरण की गाँठ होती है न ? सूरण समझते हो ? भैया ! कन्द होता है न कन्द ? सूरळ को क्या कहते हैं ? सूरण कहते हैं न ? ऐसी गाँठ नहीं होती ? कन्दमूल। बड़ी गांठ होती है, कन्दमूल की बडी गाँठ होती है, कन्दमूल होता है। इतनी (बड़ी) गाँठ। जहाँ छूरी मारो वहाँ अकेला रस ही पडा है। ऐसे आत्मा देहदेवल में अकेला आनन्दकन्द का पिंड पडा है। आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्द लबालब भरा है। जैसे मीठा में... मीठा को क्याकहते हैं ऽ लवण... लवण। लवण में खारापन भरा है और जैसे खडी मेंसफेदपना भरा है, कन्दमूल सूरण में अकेला रस भरा है, वैसे भगवान आत्मा असंख्य प्रदेशी आनन्दरस से भरा पडा है, आहा.. ! उसका यदि राग से भिन्न होकर ज्ञान नहीं किया तो जन्म-मरण में चौरासी में फिरना पडेगा। इसलिये कहते हैं कि, ऐसा मिलना महादुष्कर है। इसलिये '**आपो लख लीजे**' ऐसा अनन्त में कहा।

भगवान आत्मा... ! पहले समझन करनी चाहिए। सत्समागम से, शास्त्र श्रवण से, विचार, मनन, पठन-पाठन से आत्मा क्या चीज़ है उसे समझ में लेना चाहिए औ॒र लेकर बाद में अन्दर में भेदज्ञान करना, यह बात सातवीं गाथा में कहते हैं। सातवीं गाथा है न ? गुजराती में छठ्ठी होगी। देखो !

सम्यग्ज्ञान की महिमा और कारण

धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवै;
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।
तास ज्ञानको कारन, स्व-पर विवेक बखानौ;
कोटि उपाय बनाय भव्य,ताको उर आनौ।।७।।

अन्वयार्थ :- (धन) पैसा, (समाज) परिवार, (गज) हाथी, (बाज) घोड़ा, (राज) राज्य (तो) तो (काज) अपने काम में (न आवै) नहीं आते; किन्तु (ज्ञान) सम्यग्ज्ञान

(आपको रूप) आत्मा का स्वरूप - (जो) (भये) प्राप्त होने के (फिर) पश्चात् (अचल) अचल (रहावै) रहता है। (स्व-पर विवेक) आत्मा और परवस्तुओं का भेदविज्ञान (बखानौ) कहा है, (इसलिये) (भव्य) जीवो ! (कोटि) करोड़ों (उपाय) उपाय (बनाय) करके (ताको) उस भेदविज्ञान को (उर आनौ) हृदय में धारण करो।

भावार्थ :- धन-सम्पत्ति, परिवार नौकर-चाकर, हाथी, घोड़ा तथा राज्यादि कोई भी पदार्थ आत्मा को सहायक नहीं होते; किन्तु सम्यग्ज्ञान आत्मा का स्वरूप है; वह एकबार प्राप्त होने के पश्चात् अक्षय होजाता है- कभी नष्ट नहीं होता, अचल एकरूप रहता है। आत्मा और परवस्तुओं का भेदविज्ञान ही उस सम्यग्ज्ञान का कारण हैं; इसलिये प्रत्येक आत्मार्थी भव्य जीवको करोड़ों उपाय करके उस भेदविज्ञान के द्वारा सम्यग्दर्शन प्राप्त करना चाहिए।

'सम्यग्ज्ञान की महिमा और उसका कारण।'

धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवै;
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।
तास ज्ञानको कारन, स्व-पर विवेक बखानौ;
कोटि उपाय बनाय भव्य,ताको उर आनौ।।७।।

बडी अच्छी, हिन्दी में सार भर दिया है। '**धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवे**;...' पैसे कितना काम में आयेगा ? नहीं (आयेगा) ? धुल में भी काम नहीं आता। अनाज तो आनेवाला होगा तो आयेगा। अनाज काम में आता है ? क्या अनाज आत्मा को काम में आता है ? वह तो धूल है, जड़ है। समझ में आया ? दूसरी चीज़ तो आत्मा के हित के लिये काम नहीं आती परन्तु अपने में शुभ-अशुभभाव उत्पन्न होता है, वह भी अपने हित के लिये काम आते नहीं। आहा..हा... ! समझ में आया ? भाई ! ये आपके पैसे क्या काम आते हैं ? आप को सब पैसेवाले कहते हैं।पन्द्रह लाख, दस लाख धूल लाख इकट्ठे किये हैं न ? ऐसालोग बोलते हैं। यहाँ तो ना कहते हैं।

पंडित 'दौलतरामजी' गृहस्थाश्रम में है परन्तु शास्त्र में जो यथार्थ कहा है उसकी बात

हिन्दी में रची है।धन अर्थात् पैसा। देखो ! पैसा अपने काम में नहीं आता। है ? उसमें लिखा है ? 'धन काज न आवे' ऐसा ले लेना। उसमें है या नहीं ? है न ? धन (के बाद) आखिर का शब्द लेना। 'धन काज न आवे।' लक्ष्मी अपने आत्मा के लिये काम नहीं आती। मेरी लक्ष्मी ऐसी ममता में काम आती है तो ममता तो दु:खरूप है। समझ में आया ? 'धन काज न आवै...' लक्ष्मी अपने काम नहीं आती, वह तो धूल है। मरण के समय आ... (हो जाता है)। मरण के पहले कहाँ काम में आती है ? यह तो दृष्टन्त देते हैं।

अभी कोई कहता था, अरे... ! इतनी-इतनी लक्ष्मी, चालीस-पचास लाख रूपये थे, इज्जत बड़ी थी, परन्तु ऐसाप्रसंग बन गया कि, कोई खड़ा नहीं रहा, कोई साथ में न रहा। समझ में आया ? यह व्यक्तिगत बात थी। यहाँ हमारे पास तो बहुत बात आती है न ! पचास-पचास लाख रूपये थे और बडी इज्जत थी लेकिन ऐसा प्रसंग बन गया। बडे-बडे गवर्नर को और बड़े-बड़े (व्यक्ति को) कहा (लेकिन कोई) काम नहीं आया। समझ में आया ? क्या आवे ?

मुमुक्षु :- सर्व गुण काञ्चनमय:

उत्तर :- धूल में भी नहीं है। ए..इ... ! 'सर्व गुण काञ्चनमय:' सर्व गुण कांचन में-धूल में-सोना मे है। पैसा बहुत था। पचास लाख रूपये हैं, वे व्यक्तिगत आकर कहते थे, आहा..हा... ! आप कहते थे वह बात हमें प्रत्यक्ष नजर में आयी। इतने-इतने पैसे, इतनी इज्जत, इतनी दुकान, इतने नौकर, इतनी सिफारीश। क्या कहते हैं ? इतनी-इतनी सिफारीश बड़े गाँव में, हाँ ! लेकिन ऐसा प्रसंग बन गया... आहा..हा... ! जाओ ! जेल में। अरे..रे... ! इतने पैसे, इतने मकान कहाँ गया ? सामने कोई देखने आये नहीं। भाई ! अपने काम लगेगा। अधिकारी आये तो दूर हट जाये, हमें काम सोपेंगे। ऐसा सब बनता है, सब सुना है।

कहते हैं, 'धन काज न आवै'। अपने हित के लिये मरण समय जीवन में धन बिलकुल काम नहीं आता। करोड़ रूपये हो, पाँच करोड, धूल करोड़ो हो (काम नहीं आते)। समझ में आया ?

मुमुक्षु :- दान करे तो ... काम लगे न ?

उत्तर :- दान करे तो राग मंद हो, राग मंद हो तो पुण्य होता है।

मुमुक्षु :- दान भी नहीं करना ?

उत्तर :- नहीं करने को किसने कहा ? दान में राग मंद होतो पुण्य होता है। पैसेदिये तो पुण्य होता है, अभिमान में दिया (कि), मैंने दिये, दूसरे से मैं अच्छा हूँ, बड़ा कर्ता हूँ (ऐसे) अभिमान (करता है) तो पुण्य भी नहीं होगा। समझ में आया ? राग मंद हो तो शुभभाव होता है। परन्तु शुभभाव आत्मा को शरण कहाँ है, यहाँ तो ऐसा कहते हैं। पांच-पचास साल बहुत शुभभाव किया। मरण के समय शरण किसका ? वह शुभभाव आया वह तो चला गया, उसका पुण्य बन्ध गया, अब शरण किसका लेना ? आहा..हा... ! भगवान का स्मरण करो। भगवान को कहाँ से स्मरण ले ? अन्दर असाध्य (हो गया हो) इतनी वेदना (हो)। आत्मा क्या है (उसकी) कभी पहिचान नहीं की। राग से, विकल्प से आत्मा भिन्न है। चिदानन्द की डली है। आनन्दस्वरूप भगवान आत्मा, जिसमें एकाग्र होने से अतीन्द्रिय आनन्द प्रकट होता है, वह तो कभी किया नहीं। कौनसे समय काम आती है ? लक्ष्मी क्या काम आती है ? डॉक्टर बुलाने में ? डॉक्टर क्या... ?

मुमुक्षु :- खड़ा हो जाये।

उत्तर :- खड़ा हो जाये। ऐसे कहते हैं कि, डॉक्टर आकर खड़ा हो जाये। कुछ करे नहीं। डॉक्टर क्या करे ? यहाँ एक आया था। आफके मकान में यहाँ आया था न ? इनके मकान में। 'महुवा' के थे न ? 'महुवा' के न ? क्या कहते हैं ? 'घोघा' के, 'घोघा' के (थे)। (संवत) १९९४ के पहले वैष्णव थे, वैष्णव। होशियार आदमी था। बाद में दर्शन करने का भाव हुआ। डोक्टर के पीछे बहुत पैसे खर्च किये। सब डोक्टर आये। हमें बुलाया, क्योंकि देह की स्थिति पूरी होने की तैयारी थी। आपके मकान में, भाई ! सेनेटोरियम में। होंशियार आदमी (था, कहने लगा), महाराज ! कपड़ा बदलने की तैयारी हो गई है। ये सब डोक्टर इंजेक्शन खोचते हैं, कुछ काम नहीं करता। पैसा ले जाये। डॉक्टर आया था, वह भी गृहस्थी था, मोटर थी, पैसे लेने आया। हम 'हीराभाई' के मकान में थे न ? पहले तीन वर्ष दूसरे में थे। कुछ काम नहीं करता। ये डॉक्टर भी नहीं करते। इंजेक्शन खोजा करते हैं। साध्य था। अब देह में रहने का

थोड़ा काल है। यह कपड़ा बदलकर दूसरा शरीर हो जायेगा। रात को मर गये। समझ में आया ? क्या करे ? लक्ष्मी क्या करे ? धूल क्या करे ?

आत्मा अन्दर शरण है उसकी तो कभी पहिचान की नहीं। उसका विश्वासकिया नहीं कि, मेरा आनन्द मेरे पास है। चारों ओरसे पीड़ा हो लेकिन मैं अन्तर आनन्द हूँ उसमें राग से पृथक् होकर मैं उसमें रहूँ तो मुझे विश्राम, आराम मिले। समझे ? आराम वहाँ मिले, और जगह आराम है नहीं। ये बराबर होगा ? पैसा-पैसा कुछ काम नहीं करता ?

मुमुक्षु :- पैसे थे तो ...

उत्तर :- क्या काम आया ? आत्मा को क्या है ?

'धन काज न आवै' एक बात। 'समाज काज न आवै' दूसरा बोल। सबके साथ यह शब्द है न ? '**धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवै;...**' धन काम में न आवे और समाज। पचीस-पचास कुटुंबी हो क्या काम आवे ? आत्मा को क्या है ? अरे... ! आप को दु:ख है, रोये, क्या करे ? कोई समाज आत्मा के शरण में - हित में काम करनेवाला नहीं। गज (अर्थात्) हाथी घर में हो। बडा हाथी हो। समझ में आया ? क्या काम आवे ?

मुमुक्षु :- अभी हाथी के बदले में मोटर पडी हो।

उत्तर :- मोटर पडी हो। पहले हाथी थे, अब मोटर हो। ए..ई... ! कितनी मोटर है ? उसके पास लाख रूपये की मोटर है। धूल में भी नहीं है। क्या कहते हैं ? ब्लडप्रेशर हो जाता है, तब एं..ए..ए.. करता है। दो करोड रूपये होने परभी। धूल में भी काम नहीं आता। वहाँ एं..ए..ए.. होजाता है। यहाँ एक बार नहीं हुआ था ? यहाँ आहार दान के लिये, उनकी आहार की भावना थी। उसी दिन उसके लडके को... उसके पासदो करोड रूपये हैं, एं...ए..ए.. हो गया। क्या है ? ये रूपये है न ?

मुमुक्षु :- घोडागाडी में लाने पडे।

उत्तर :- हाँ, लाने पडे थे। धूल में भीपैसा काम नहीं आता। समाज क्या काम आता है ? ये उनके पिताजी थे, उनके मौसा थे, सब थे। कौन काम करता है ? हाय... हाय... ! ये डॉक्टर

... थे। डॉक्टर ने कहा, हम इंजेक्शन लगाते हैं, क्या होगा (हमें पता नहीं)। डॉक्टर को भी विश्वास नहीं होता। समाज भी अपने काम में नहीं आता। है ? हाथी काम में नहीं आता,घोडा काम में नहीं आता। बडा पाँच-पाँच हजार, दस-दस हजार घोडा हो,लाख-लाख रूपये का घोडा होता है न ? 'अमेरकिा' में दो लाख का घोडा होता है। अढाई-अढाई लाख के घोड़े होते है। क्या कहते हैं ? शर्त... शर्त... (रेस में) भागने की। अढ़ाई-अढ़ाई लाख के (होते हैं), क्या धूल में काम आये ? मर जाये तब एं..ए..ए.. हो जाता है।

'राज काम न आवे।' राज क्या काम करता है ? देखो ! समझ में आया ? ये 'दिग्विजय' कितने करोडपति हैं ! 'जामनगर' के राजा थे न ? मर गये। कितने करोड़ों रूपये उसके पास हैं। उसकी रानी के पास करोड़ों रूपये हैं। 'जामनगर', अभी मर गये। समझ में आया ? क्या काम आवे ? हम (संवत) २०१० की साल में एक दिन उसके पास गये थे। महाराज ! मुझे दर्शन करने हैं। हम 'जामनगर' के बाहर जंगल जाते थे, उसके बंगले के पास जंगलजाते थे। उसको मालूम पड़ा (तो कहा), महाराज ! मुझे दर्शन करना है। मैं अपासरा में आउं लेकिन मेरी आँख दुखती है। अभी मर गये। वहाँ गये, उसके बंगले में पन्द्रह मिनिट सुनाया। उसकी रानी बहुत होशियार है। ये समाज, साम्राज्य कुछ काम नहीं करता। धूल में नहींहै।बारह महिने की एक करोड़ की पैदाईश थी। (कहने लगे), सच बात है, महाराज ! ये काम करने जैसा है। आत्मा का साम्राज्य आत्मा का काम करता है। आत्मा में अनन्त ज्ञान, आनन्द पड़ा है, ये आत्मा का साम्राज्य अपने शरणभूत होता है, दूसरा कोई शरण मिलता नहीं। कितना करोड़ है ! चले गये, थोडे दिन पहले - 'दिग्विजय' 'जामनगर' का दरबार चला गया।

ये 'भावनगर' दरबार। घूमते थे। मुझे असुख है, इतना बोला। ५३ वर्ष की उम्र। रानी को बुलाओ। रानी आयी। (रानी को कहा) मुझे असुख है। रानी डोक्टर को बुलाने गई (उतने में) खलास ! ये 'भावनगर' दरबार, 'कृष्णकुमार' यहाँ दो बार आये थे, व्याख्यान में आये थे। क्या करे राज ? शरण है ?

मुमुक्षु :- ... मान-पान देना तो चाहिए न !

उत्तर :- क्या करे ? मान में आत्मा को क्या हुआ ? अन्त में इतना बोले। सुना नहीं ? 'लालबहादुरशास्त्री' गुजर गये न ? 'मुंबई' आये थे न ? पुस्तक... पुस्तक... 'अभीनंदन ग्रन्थ' ! तुम्हारे पिताजी ने दिखाया या नहीं ? बाद में दिखायेंगे। एक पुस्तक है। शरीर को जब ७५ वर्ष है न, तब 'लालबहादुर शास्त्री' आये थे। उसने 'अभिनंदन ग्रथ' दिया, अपने पास है। बाद में दिखायेंगे, अभी तो थोड़े दिन रहनेवाले हैं न ? एक साडे पाँच हजार का पुस्तक है। क्या कहते हैं ? 'अभिनन्दन ग्रन्थ'। उसने दिया था। 'लालबहादुर शास्त्री' आझाद मैदान। दस-बारह हजार आदमी व्याख्यान में आते थे। बहुत आदमी (आते थे)। शरीर को ७५ वाँ वर्ष बैठा उस समय आये थे। (संवत) २०२० की साल, ७५ (वर्ष) ! उसमें अभिनंदन देने को आये थे। मर गये, और मरते समय क्या हुआ सुना है ?

मुमुक्षु :- वडाप्रधान हो गये...

उत्तर :- उसमें आत्मा को क्या हुआ ? मरते समय इतना बोले, मेरे बाप ! हे राम ! बस ! अन्त में इतनाबोले। मेरे बाप... मेरे बाप... ! अपने कहते हैं न मेरे बाप ! हे राम ! बस ! अन्दर इस आत्माराम के भान बिना कुछ शरण-फरण है नहीं। लाख पुलिस खड़े होते हैं। बाद में मुर्दे के पास खड़े रहे। मुर्दे को मान दिया। बन्दूक ऐसे ऊलटी रखते हैं, बाद में ऐसे रखते हैं। क्या हुआ उसमें ?

देखो ग्रंथाकार 'दौलतरामजी' कहते हैं, 'राज तो काम न आवै।' समाज में सब आ गया ? स्त्री काम में आती है या नहीं ? अच्छा पुत्र, अच्छाबाप कोई काम नहीं आता ? समाज में आ गया। समाज अर्थात् परिवार। परिवार में कोई आत्माको काम आते नहीं आहा..हा...! अन्दर चित्र दिया है, देखो ! परिवार-स्त्री, पुत्र ऐसे दिखाया है, देखो ! समझ में आता है ? पुत्री, पैसे, घोडा,हाथी,तिजोरी सब दिखाया

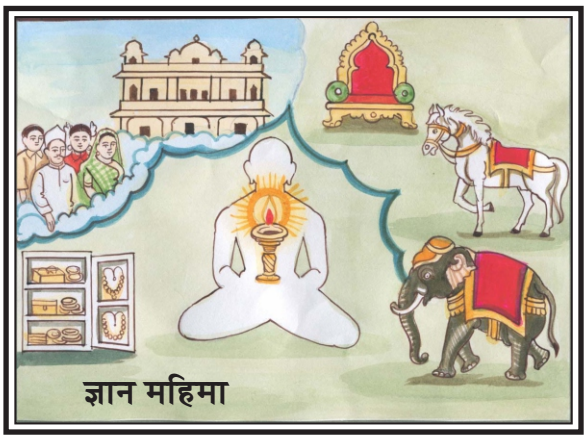
ज्ञान महिमा

है। महल है। धूल में भी काम नहीं आता। क्या काम आता है ?

'**सम्यग्ज्ञान (आपको रूप)...**' देखो ! दो बात कही। परचीज अपने को काम नहीं आती तो अपनी चीज है क्या ? अपनी चीज है क्या ? पर काम नहीं आता तो अपनी चीज क्या है तो अपने को काम आती है ? कि, अपनी चीज ज्ञानस्वरूप भगवान, चैतन्यमसूर्य मैं आत्मा हूँ। चैतन्य ज्ञानस्वरूप भगवान आत्मा का, पुण्य-पाप के राग से भिन्न होकर अपने ज्ञान का ज्ञान (द्वारा) जो अन्तर में अनुभव किया तो वही अपना ज्ञान है, वह अपने को काम आयेगा, दूसरा कोई काम आयेगा नहीं। समझ में आया ?

'**सम्यग्ज्ञान (आपको रूप)...**' है देखो ! क्या कहते हैं ? सम्यग्ज्ञान '**आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।**' सब चीज तो चली जायेगी। भगवान आत्मा चैतन्यसूर्य बिंब है, चैतन्य का सूर्य बिंब है, उसका अपने सूर्य का अन्दर भान होकर अन्दर ज्ञान किया तो अपना ज्ञानस्वरूप है तो ज्ञान अचल रहेगा। ज्ञान में श्रद्धा, शांति आदि सब साथ में है। अपने आत्मा का ज्ञान किया तो वह ज्ञान साथ में रहेगा। क्योंकि ज्ञान अपना रूप है। राग, पुण्य अपना रूप नहीं। आहा..हा... ! कितनी बात कही है।

ज्ञान अपना रूप (है) इसमें भी वह ले लिया। उसमें भले ऐसे लिया, '**धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवै, परन्तु ज्ञान आपको रूप...**' में ऐसा ले लिया कि, शुभ-अशुभ जो राग होता है वह अपना रूप नहीं। वह भी अपने को काम नहीं आता। भाई ! आहा..हा... ! भगवान चैतन्यसूर्य शांतरस से भरा, ऐसा अपना निज रूप है, जिसमें शुभ-अशुभराग का विकार भी नहीं तो परचीज तो काम कहाँ से आयेगी ? पुण्य का विकल्प अपने काम में नहीं आता, ऐसा कहते हैं। क्या कहा, समझ में आया ? क्या कहा ? पुण्य-पाप भी काम नहीं आता, ऐसा उसमें कहा या नहीं ?

मुमुक्षु :- ... उपदेश सुनाने में...

उत्तर :- सुने लेकिन अन्दर ज्ञान न करे तो क्या करे ? समझ में आया ? पुत्र तो उसे कहते हैं, बात तो शास्त्र में ऐसे चलती है। पुत्र क्या ? अपने पिता को, माता को पवित्र बनाने में सहाय(रूप) हो, पवित्र बनावे उसे पुत्र कहते हैं। पैसे की सेवा को नहीं कहते, ऐसा शास्त्र में

है। समझ में आया ? आत्मा की वस्तु अपने समझी हो, समझी हो तो माता-पिता को समजाये न ? समझे बिना क्या समजाये ? यहाँ तो पवित्रता (की बात है)।

भगवान आत्मा ज्ञानानन्द स्वरूप है, शुद्ध चैतन्यजल से भरा है, उसकी तुम अनुभव, दृष्टि करो, वही पवित्रता का कारण हैं ! दूसरा कोई आत्मा को शरण नहीं। समझ में आया ? देखो न कितना कहते हैं ! ज्ञान अपना स्वरूप **'प्राप्त होने के पश्चात् अचल रहता है।'** देखो ! पुण्य-पाप भी नहीं, यहाँ तो ऐसा कहते हैं। शुभ-अशुभभाव भी चलायमान है, अस्थिर है, विकार है, पाप होता है, शुभ होता है, पुण्य होता है, पुण्य-पाप होता है, अचल नहीं है, वह तो चल है। वह शरण नहीं, आत्मा को शरण नहीं तो बाहर की चीज़ तो शरण कहाँ से हो ? बहुत लिखा है। समझ में आया ?

'अचल रहावै' वह चल है, (वह) चीज़ चली जायेगी। तेरी चीज़ है-ज्ञानानन्द स्वरूप, उसका अन्तर ध्यान करके प्रकट करो, अचल रहेगा। वस्तु है, कहाँ जायेगी ? वस्तु है, वहकहाँ जायेगी ? ज्ञान में ज्ञान को मिलाकर एकाकार हुआ वह अचल रहा, वह ज्ञान इस लोक में भी रहेगा, परलोक में भी साथ में आयेगा। सम्यग्ज्ञान किया हो तो। इसके अलावा कोई चीजज़ आत्मा को काम आती नहीं। ओ..हो..हो... ! शुभभाव भी काम करे, ऐसा नहीं लिया। अशुभभाव आया, लक्ष्मी का खर्च किया तो पुण्य बँधा तो पुण्य अपने को काम आता है (ऐसा नहीं कहा)। है उसमें ? देखो कुछ काम नहीं आता, क्या काम आयेगा ?

तेरा स्वरूप शुद्ध चिदानन्द पड़ा है। अखंडानन्द भगवान पूर्ण आनन्द और ज्ञान से भरा प्रभु; उस ज्ञान का ज्ञान करो तो अचल रहेगा। अब ज्ञान कैसे करना यह बताते हैं। समझ में आया ? ज्ञानस्वरूप अपना, ये पुस्तक, पन्ने का (ज्ञान) नहीं। अपने ज्ञान का ज्ञान अन्दर में करना। मैं ज्ञान चैतन्यसूर्य हूँ, ऐसा अंतर्मुख होकर (ज्ञान करना)। वह कैसे करना यह बताते हैं। देखो !

'तास ज्ञानको...' सम्यग्ज्ञान का कारण। अब सम्यग्ज्ञान होता कैसे है ? कि, जो सम्यग्ज्ञान अपना स्वरूप है और प्रकट होकर अचल रहता है। यह अचल ज्ञान प्रकट कैसे होता है ? **'(स्व-पर विवेक) आत्मा और परवस्तुओं का भेदविज्ञान...'** देखो ! समझ में

आया ? भगवान आत्मा ज्ञान और आनन्दस्वरूप है। शरीर, वाणी, मन पर हैं। पुण्य-पाप का राग विकार है। इन पर से अपना स्वरूप अन्दर में भिन्न करना, भेदज्ञान करना - वही सम्यग्ज्ञान प्रकट करने का कारण है। वही सम्यग्ज्ञान अपने स्वरूप से अचल रहेगा, दूसरी कोई (चीज़) अचल रहेगी नहीं। भाई ! समझ में आया ?

'**आत्मा और परवस्तुओं का भेदविज्ञान...**' उसमें महासिद्धांत है। समझ में आया ? सम्यग्ज्ञान, अपना अचल रूप है तो उसको प्रकट करो तो वह अचल रहेगा। दूसरी चीज अचल नहीं, पुण्य-पाप, शरीर आदि अचल नहीं। एक बात। अब इस सम्यग्ज्ञान का कारण कौन ? भेदज्ञान। भेदज्ञान का अर्थ क्या ? कि, स्व-पर की भिन्नता करना। स्व-भगवान आत्मा पूर्ण शुद्ध चैतन्य की ओर दृष्टि करके, विकार और शरीर से भेद करना। भेदज्ञान... भेदज्ञान...समझ में आया ? आता है न ?'**भेदविज्ञानतः सिद्धा**''अमृतचंद्राचार्य' महाराज कहते हैं।'कुन्दकुन्दाचार्य' महाराज के श्लोक की टीका बनाई है।

भेदविज्ञानतः सिद्धाः सिद्धा ये किल केचन।
अस्यैवाभावतो बद्धा बद्धा ये किल केचन।।१३१।।

अभी तक अनन्तकाल में जो कोई मुक्ति को प्राप्त हुए हैं, वे भेदविज्ञान से हुए हैं। समझ में आया ? अर्थात् राग और शरीर, वाणी, मन की क्रिया मेरी नहीं, राग मेरा नहीं, उससे भिन्न अपने स्वरूपको भेदज्ञान करके अब तक अनन्त (जीव) मुक्ति को प्राप्त की, वह (इस) उपाय से प्राप्त की है। आहा..हा... ! '**भेदविज्ञानतः सिद्धाः सिद्धा ये किल केचन**' जितने अनन्त सिद्ध हुए, वे भेदविज्ञान से ही मुक्ति पाये हैं। '**अस्यैवाभावातो बद्धा**' राग और विकल्प से भिन्न भगवान आत्मा (है), उसका अभाव (है अर्थात्) भेदज्ञान नहीं किया और भेदज्ञान का अभाव रहा अर्थात् पुण्य-पाप, शरीर मेरा है ऐसी मान्यता रही वही बन्ध का कारण है। जगत में भटकने का कारण वह एक ही है। आहा..हा... ! समझ में आया ?

भेदज्ञान संवर जिन्ह पायौ
सो चेतन सिवरूप कहायौ।
भेदग्यान जिन्हके घट नांही
ते जड़ जीव बंधैं घट मांही।

एक श्लोक में सब आ गया। 'समयसार नाटक' का श्लोकहै। 'बनारसीदास' का (बनाया हुआ है)। 'कुन्दकुन्दाचार्यदेव' के कलश हैं, उसमें से बनाये हैं। भेदज्ञान। भेदज्ञान - राग, विकल्प, शरीर से भिन्न। दूसरा ज्ञान नहीं, शास्त्रज्ञान नहीं।

भेदज्ञान ही ज्ञान है, बाकी बूरो अज्ञान,
धर्मदास क्षुल्लक कहे, हेमराज तुं मान।

एक 'धर्मदासजी क्षुल्लक' हुए हैं। दिगम्बर। पचास वर्ष पहले (संवत) १९४६-१९४८ की साल में (हुए हैं)। 'धर्मदासजी क्षुल्लक' ब्रह्मचारी हुए हैं। क्षुल्लक थे, अध्यात्मज्ञानी थे।

भेदज्ञान ही ज्ञान है, बाकी बूरो अज्ञान,
धर्मदास क्षुल्लक कहे, हेमराज तुं मान।

ऐसा आया है। देखो ! यही बात कहते हैं। तेरा भगवान चिदानन्दस्वरूप विकार, पुण्य-पाप का राग, कार्य से भिन्न है, ऐसा भेदज्ञान (होना) वही ज्ञान है। '**बाकी बूरो अज्ञान**।' संसार का ज्ञान और शास्त्र का ज्ञान आत्मा का कोई काम करते नहीं। आहा..हा... ! समझ में आया ?

भेदज्ञान संवर जिन्ह पायौ
सो चेतन सिवरूप कहायौ।

'**भेदज्ञान संवर जिन्ह पायौ।**' वह तो चेतन शिवरूप हो गया। समझ में आया ? आहा..हा... ! वही कहते हैं, देखो ! अपना रूप। बाद में स्वरूप का भेदज्ञान हुआ, वह क्रमश: राग की अस्थिरता टालकर स्वरूप में स्थिर होगा और मुक्ति पायेगा। परन्तु पहले भेदज्ञान ही नहीं है, वह राग की एकताबुद्धि है, पुण्य की एकताबुद्धि है, देह की क्रिया मैं कर सकता हूँ, ऐसी जसिकी मान्यता है, वह मूढ भेदविज्ञान के अबाव से '**ते जड़ जीव बंधै घट मांही**' समझ में आया ? भेदज्ञान जिसने घट में पाया, वह चेतनरूप शिव कहाया। वह चेतन तो शिव-मुक्ति में (जाने को) तैयार (है)। अरे..! शिव ही है, मुक्तस्वरूप ही है।

आहा..हा... ! कठनि बात है। कहो, समझ में आया ?

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- बदल जाता है, उसका अर्थ कि, निश्चय करता नहीं। निर्णय किया हो वह बदले ? अचल रहावै। नाम पडा है। भाई ! (ऐसा कोई कहे) तो सपने में बोलेगा, हैं... ! भाई कहाँ है ? इसमें कहीं भाई है ? किसे कहना ? शरीर कोकहना ? नाम गिराते हैं, किसका नाम है ? ये तो मिट्टी-धूल है। समझ में आया ? शरीर किसको कहना ? नाक को ? आँख को ? किसे कहना ? सारे अवयव को शरीर नाम दिया है। ऐसे नाम दिया है। फलाना है, पानाचंद नाम है, लक्ष्मीचन्द नाम है। किसका नाम है ? आत्मा में तो है नहीं।

मुमुक्षु :- पक्का कर लिया है।

उत्तर :- पक्का उसने कर लिया है, सबने मिलकर नहीं किया है। सबने इकट्ठे होकर नहीं करवाया है, उसने मानलिया है। सपने में भी बुलाये, जमु.. ! हँ.. ! कहाँ है जमु ? सपने में नहीं है, वह तो चैतन्यरूप है। ऐसा दृढ संस्कार लगा दिया है। समझ में आया ?

कहते हैं,

भेदज्ञान संवर जिन्ह पायौ
सो चेतन सिवरूप कहायौ।

आहा..हा... ! **'भेदज्ञान जिन्हके घट नांही'** चाहे तो क्रियाकांड करता हो, पंच महाव्रत पालता हो, बाह्य की क्रिया (करता हो) लेकिन उससे भिन्न ऐसा भान नहीं है, वह तो जड़ है, ऐसा कहते हैं। **'ते जड़ जीव बंधैं घट मांही।'** वह चेतन नहीं हुआ, ऐसा कहते हैं, सामने-सामने लेते हैं। समझ में आया ?

भेदज्ञान संवर जिन्ह पायौ
सो चेतन सिवरूप कहायौ।
भेदग्यान जिन्हके घट नांही
ते जड़ जीव बंधैं घट मांही।

आहा..हा...! देखो ! 'बनारसीदास' ने बनाया है। मूल श्लोक में से बनाया है, 'अमृतचंद्राचार्यदेव' का मूल श्लोक है। समझ में आया ?

(यहाँ) कहते हैं, सम्यग्ज्ञान अपना स्वरूप है। नित्य चैतन्यज्योति जल रही है, झगमग झगमग ज्योति ! भगवान आत्मा पर नजर कर। पुण्य-पाप का विकल्प, शरीर, वाणी, मन से हटाकर चैतन्यज्योत नित्य ध्रुव है। ध्रुव... ध्रुव (है) उसमें दृष्टि लगा दै। तुझे राग से, पर से भेदज्ञान हो, वही आत्मा का अचल रूप है। भेदज्ञान ही मुक्ति का उपाय है, दूसरा कोई मुक्ति का उपाय नहीं। आहा..! समझ में आता है या नहीं ?

'आत्मा और परवस्तुओं का भेदविज्ञान कहा है।' '(बखानौ)' देखा ? भगवान ने उसकी प्रशंसा की है। सम्यग्ज्ञान में स्व-पर के भेदज्ञान की प्रशंसा की है। लाख शास्त्र पढे हों, लोगों का रंजन करता हो, उसके साथ भेदज्ञान का संबंध है ही नहीं। अपना स्वर और पर की अन्दर में भिन्नता करनी, अभ्यास करना... अभ्यास करना। क्या अभ्यास करना ? यहपहले कहा था। भिन्न तत्त्व का अभ्यास करना। भगवान आत्मा पहले जानना कि क्या चीज़ है ? क्या वस्तु है ? उसमें विकार कैसे होता है ? संयोग कैसा है ? संयोगी चीज़ क्या है ? संयोगी विकार क्या है ? और स्वभाव क्या है ? उसका पहले बोध करके अन्तर में उससे भिन्न करना। भेदज्ञान-छैनी मारनी। समझ में आया ? छैनी मारते हैं और दो टूकडे हो जाते हैं। वैसे भगवान आत्मा चैतन्य आनन्दस्वरूप और पर, विकार और शरीर, (ऐसे) स्व-पर का भेद करके, विवेक अर्थात् भेदविज्ञान कहा है। समझ में आया ? आहा..हा...! थोडे में बहुत बात कही है। भाई ! आहा..हा...!

भाई ! तू प्रभु कोई चैतन्यवस्तु है या नहीं ? समझ में आया ? पदार्थ है तो उसका कोई दल, प्रदेश पिंड है या नहीं कोई ? पिंड है तो उसमें कोई भाव है या नहीं ? समझ में आया ? जैसे यह लकडी है, देखो ! यह सुखड है, सुखड। चंदन, देखो ! यह चंदन है। वस्तु है या नहीं ? उसकी चौडाई है या नहीं ? उसमें सत्त्व भरा है या नहीं ? सुगन्ध, मुलयमता भरी है या नहीं ? उसे वस्तु कहते हैं या नहीं ? यह रूपी वस्तु है। आत्मा अरूपी है, परन्तु वस्तु है। अनन्त अनन्त ज्ञानादि अन्दर भरा है, बेहद शक्ति (है)। क्यों लक्ष्य में नहीं आता ? कि, उसकी वर्तमान अवस्था अनादि से परसन्मुख है। समझ में आया ? वस्तु में बेहद ज्ञानानन्द

स्वभाव पडा है, पूरा दल पडा है, पूरा चैतन्यदल, आनन्द की मूर्ति प्रभु है। समझ में आया ? हलवाई... हलवाई कहते हैं न ? हलवाई। हलवाई वह नहीं करते हैं ? लकडी का बीबा करके उसमें शक्कर भर देते हैं। पूतली बनाते हैं न ? शक्कर की पूतली नहीं बनाते हैं ? लकडे का बीबा होता है न ? तो शक्कर ... भर जाती है। ठंडा हो जाये फिर बीबा निकाल देते हैं। शक्कर की पूतली रह जाये। ऐसे आत्मा इस शरीर के बीबा से लक्ष्य छोड दे, पुण्य-पाप के विकल्प का मैल छोड़ दे और अन्दर में शक्कर अर्थात् अनन्त आनन्द की मूर्ति-पूतली है। वह बात बैठ जाये लेकिन अन्दर ये क्या है ? समझ में आया ? ऐसा अनन्त आनन्द की मूर्ति चैतन्यपिंड है।

जैसे शक्कर में मैल होता है न ? मैल। दूध डालकर धोते हैं न ? दूध डालकर नहीं धोते हैं ? साफ करते हैं। उसे क्या कहते हैं ? बूरा कहते हैं न ? बूरा कहते हैं। होता तो अच्छा है, कहते हैं बूरा। शक्कर में दूध डालकर साफ करते हैं न ? उसे क्या कहते हैं ? बूरा कहते हैं ? बूरा हो गया ? हुआ तो साफ है। ऐसे भगवान आत्मा में भेदज्ञान डालकर, पुण्य-पाप का विकल्प जो है उसका भेद करना। वहाँ जैसे बूरा होता है, वैसे यहाँ भला होता है। समझ में आया ? आहा..हा... !

कहते हैं कि, आत्मा में भेदज्ञान ही एक कारण है। स्व-पर का भेदज्ञान वही ज्ञान का कारण है। ज्ञान का हेतु यह लिया, हाँ ! अभ्यास करना या धारणा करना ऐसा नहीं लिया। पहले अभ्यास करने को कहा था। कारण यह है। आहा..हा... ! परन्तु इतनी निवृत्ति नहीं, समय नहीं (है)। कहते हैं, भगवान ! तुझे इतना समय मिला है। आहा..हा... ! चैतन्यसूर्य भगवान अनन्त ज्ञान, आनन्द से भरा हुआ पदार्थ है, वस्तु है। अरूपी लेकिन वस्तु है। वस्तु में बसे हुए अनन्त गुण है। ऐसे भगवान आत्मा को विकार से, शरीर से अन्तर में भेद करके विवेक करना, भेदज्ञान करना, वही स्मयग्ज्ञान का उपाय है और वही सम्यग्ज्ञान आत्मा का मुक्ति का उपाय है। समझ में आया ? बाद में कहते हैं, भेदज्ञान करने के बाद क्या करना ? बाद में तो व्रतादि पालने या नहीं ? ऐ..ई.. ! भगवान ! वह विकल्प आते हैं, उससे भी बाद में भेदज्ञान करना। बाद में भी जो व्रत का विकल्प आता है वह भी राग है; उससे भी बाद में भेदज्ञान करना। बाद में भी जो व्रत का विकल्प आता है वह भी राग है; उससे भी भेद करके

एकाकार करना वही करना (है)। कब तक करना ? कि, जब तक आत्मा का केवलज्ञान प्राप्त न हो तब तक। आहा..हा... ! समझ में आया ? इसी ज्ञान को सम्यग्ज्ञान का कारण **'आत्मा और परवस्तुओं का भेदविज्ञान कहा है।'**

'इसलिये हे भव्य जीवो !' देखो ! संबोधन करते हैं, हाँ ! भव्य जीवो। अभव्य को नहीं कहते हैं। **'है भव्य जीवो ! करोड़ों उपाय करके...'** करोड़ों उपाय करके। दुनिया को छोड़, करोड उपाय कर,लाख-करोड-अबज कर। **'उसे भेदविज्ञान को हृदय में धारण करो।'** करोड़ों उपाय करके भी विकार और शरीर से भिन्न आत्मा का भेदज्ञान करो। चाहे तो परीषह सहन करना पडे, दुनिया की निंदा सहन करनी पडे, दुनिया गिनने में आये नहीं, शरीर में रोग हो, लाख प्रतिकूलता हो... आहा..हा... ! करोड़ उपाय करके भी (भेदविज्ञान कर)। देखो ! कितना जोर देते हैं ! भगवान आत्मा को विकार से, पर से भेद करना, वही तेरा हित है। वह क्रिया तो उसे ख्याल में आती नहीं। बाहर की कोई क्रिया करे तो (लगे कि), ये कुछ करता है, हाँ ! लेकिन यह करना तो मूल चीज़ है। वह ख्याल में आता नहीं, उसकी महिमा आती नहीं। वही कहते हैं।

मुमुक्षु :- उपाय तो एक ही है न ?

उत्तर :- करोड़ों उपाय करके भी यह भेदज्ञान करना, ऐसा कहते हैं। दूसरा कोई उपाय है नहीं। उपाय यह एक ही है। तुम करोड़ उपाय बनाकर भेदज्ञान करो, ऐसा कहते हैं। करोड़ उपाय अर्थात् ? चाहे तो प्रतिकूलता हो, चाहे सो अनुकूलता हो, दुनिया माने-न माने, शरीर में रोग हो, वाणी न हो, निर्धनता हो। बांझपना हो, कुँवारापन हो... समझ में आया ? सब छोड दे। एक आत्मा का ही भेदज्ञान कर और वही तेरा कर्तव्य है। समझ में आया ? ऐसा कहते हैं। वे तो कहते हैं कि, करोड़ उपाय करके भी भेदज्ञान ही करना। चाहे दूसरा लाख प्रयत्न कर, करोड़ प्रयत्न कर, उससे नहीं मिलेगा। समझ में आया ?

'कोटी उपाय बनाय भव्य, ताको उर आनौ।' उसे हृदय में धारण करो, इसके अलावा आत्मा का काम और नहीं है। भेदज्ञान में ही सम्यग्दर्शन आया और भेदज्ञान हुआ तो क्रमशः स्वरूप में स्थिरता होगी। भेदज्ञान से ही होती है। राग आया उसमें भी भेदज्ञान किया, स्थिर

होना हुआ। स्थिरता भी भेदज्ञान है, राग से भेद करना। समझ में आया ?

भावार्थ :- '**धन-सम्पत्ति, परिवार, नौकर-चाकर, हाथी, घोडा...**' बाज का अर्थ घोडा किया है। बाज का अर्थ हिन्दी में घोडा (शब्द) होता है ? '**राज्यादि कोई भी पदार्थ आत्मा को सहायक नहीं होते; किन्तु सम्यग्ज्ञान आत्मा का स्वरूप है;...**' भगवान चैतन्यमूर्ति ज्ञानकला। 'ज्ञानकला जिसके घटजागी, ते जगमांही सहज वैरागी, ज्ञानी मगन विषयसुख मांही, यह विपरीत संभवे नाहीं, ज्ञानकला जिसके रे घट जागी...' गृहस्थाश्रम में भी पुण्य-पाप के भाव से भिन्न मेरा आत्मा है, ऐसी ज्ञानकला जागी । 'ज्ञानकला जिसके घट जागी। ते जगमांही सहज वैरागी।' मैं पर से भिन्न हूँ, मेरा पर के साथ कोई संबंध नहीं। भले गृहस्थाश्रम में हो तो भी अन्दर में पर से निर्लेप रहते हैं। समझ में आया ?

'ज्ञानी मगन विषयसुख मांही, यह विपरीत संभवे नाहीं।' अंतर में सम्यक् ज्ञान प्रकट हुआ वह विषयसुख में लीन होते हैं ऐसा कभी बनता नहीं। विषयसुख तो ज़हर है। भगवान आत्मा का आनन्द है, ऐसा जिसे अन्तर में सम्यग्ज्ञान हुआ, वह विषय में प्रेम रखकर भोग में उसे सुखबुद्धि होती नहीं। समझ में आया ? चक्रवर्ती 'भरत' चक्रवर्ती घर में वैरागी। आता है या नहीं कलश ? समझ में आता है। 'भरतजी घर में वैरागी' ९६ हजार पद्मणि जैसी स्त्री। उसका शरीर भी महासुंदर, इन्द्र जिनके मित्र हैं। क्या है ? कोई चीज़ हमारी नहीं। समझ में आया ? हमारी चीज़ तो आत्मा आनन्द, ज्ञान है - ऐसा भेदज्ञान 'भरत' चक्रवर्ती को ९६ हजार स्त्री के वृन्द में होने पर भी अपना आनन्द पर से भिन्न करते हैं। समझ में आया ? और अपने आनन्द का स्वाद लेते हैं, उसका नाम भेदज्ञान है, उसका नाम ज्ञान की कला है। आहा..हा... !

'**किन्तु सम्यग्ज्ञान आत्मा का स्वरूप है, वह एकबार प्राप्त होने के पश्चात् अक्षय हो जाता है...**' ज्ञान हुआ, वह कहाँ नाश होता है ? चंद्र की दूज उगी, वहदूज तो पूनम ही होगी। चंद्र की दूज होती है ना ? वह पूनम होगी ही। एकबार बोधबीज राग से भिन्न सम्यग्ज्ञान किया (तो) क्रमशः केवलज्ञान होगा। समझ में आया ? लेकिन इस सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन की महिमा नहीं। ये करो, ये करो, ये करो, व्रत करो, दमन करो... ये करो। राग मंद हो, मिथ्यात्व

सहित पुण्य बंध जायेगा। जन्म-मरण का नाश इस सम्यग्ज्ञान, दर्शन बिना तीनकाल तीनलोक में कभी किसी को होता नहीं। समझ में आया ?

'**कभी नष्ट नहीं होता,...**' कौन ? अपना ज्ञान, चैतन्य में अन्दर एकाकार हुआ (वह) नाश नहीं होता। '**अचल एकरूप रहता है। आत्मा और परवस्तुओं का भेदज्ञान ही उस सम्यग्ज्ञान का कारण है; इसलिये प्रत्येक आत्मार्थी भव्य जीव...**' प्रत्येक आत्मार्थी-स्त्री हो, पुरुष हो, राजा हो, गृहस्थ हो, रंक हो, भिखारी (हो), वह तो बाहर की सयोंग-स्थिति है, उसके आत्मा के साथ संबन्ध नहीं। '**प्रत्येक आत्मार्थी भव्य जीव को करोड़ों उपाय करके...**' अनन्त उपाय करके यही करना है, ऐसा कहते हैं। समझ में आया ? आहा..हा...!

'**उस भेदविज्ञान के द्वारा सम्यग्दर्शन प्राप्त करना चाहिए।**' देखो ! भेदविज्ञान से ही सम्यग्दर्शन होता है। सम्यग्ज्ञान का कारण स्व-पर का भेद और भेदविज्ञान से ही सम्यग्दर्शन-आत्मा का अनुभव होता है। उससे आत्मा की मुक्ति होती है। समझ में आया ? बाद में लेंगे। सम्यग्दर्शन-ज्ञान की बात करने के बाद, आत्मज्ञान-दर्शन हुआ, बाद में व्रतादि का विकल्प आता है। श्रावक को बारह व्रतादि, मुनि को अठ्ठाईस मूलगुण (का विकल्प आता है), लेकिन वे जानते हैं कि, यह पुण्यास्रव है। मेरे भेदज्ञान जितना स्थिर है, उतना मुझे लाभ है। वह बाद में पाँचवी, छठ्ठी ढाल में कहेंगे। समझ में आया ? सातवाँ श्लोक कहा।

सम्यग्ज्ञान की महिमा और विषयेच्छा रोकने का उपाय

जे पूरव शिव गये, जाहिं, अरु आगे जैहैं;
सो सब महिमा ज्ञान-तनी, मुनिनाथ कहैं हैं।
विषय-चाह दव-दाह, जगत-जन अरनि दझावै;
तास उपाय न आन, ज्ञान-धनधान बुझावै।।८।।

अन्वयार्थ :- (पूरव) पूर्वकाल में (जे) जो जीव (शिव) मोक्ष में (गये) गये हैं,

(वर्तमानमें) (जाहि) जा रहे हैं (अरु) और (आगे) भविष्य में (जैहे) जायेंगे (सो) वह (सब) सह (ज्ञान-तनी) सम्यग्ज्ञान की (महिमा) महिमा है - ऐसा (मुनिनाथ) जिनेन्द्रदेव से कहा है। (विषय-चाह) पाँच इन्द्रियों के विषयों की इच्छारूपी (दव-दाह) भयंकर दावानल (जगत-जन) संसारी जीवों रूपी (अरनि) अरण्य-पुराने वन को (दझावै) जला रहा है,(तास) उसकी शान्ति का (उपाय) उपाय (आन) दूसरा (न) नहीं है; (मात्र) (ज्ञान-धनधान) ज्ञानरूपी वर्षा का समूह (बुझावै) शान्त करता है।

भावार्थ :- भूत, वर्तमान और भविष्य-तीनों काल में जो जीव मोक्ष को प्राप्त हुए हैं, होंगे और (वर्तमान में विदेह-क्षेत्र में) हो रहे हैं; वह इस सम्यग्ज्ञान का ही प्रभाव है। - ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है। जिसप्रकार दावानल (वन मैं लगी हुई अग्नि) वहाँ की समस्त वस्तुओं को भस्म कर देता है, उसी प्रकार पाँच इन्द्रियों सम्बन्धी विषयों की इच्छा संसारी जीवों को जलाती है दु:ख देती है; और जिसप्रकार वर्षा की झड़ी उस दावानल को बुझादेती है उसी प्रकार यह सम्यग्ज्ञान उन विषयों को शान्त कर देता है - नष्ट कर देता है।

'सम्यग्ज्ञान की महिमा और विषयेच्छा रोकने का उपाय।'

जे पूरव शिव गये, जाहिं, अरु आगे जैहैं;
सो सब महिमा ज्ञान-तनी,मुनिनाथ कहैं हैं।
विषय-चाह दव-दाह,जगत-जन अरनि दझावै;
तास उपाय न आन, ज्ञान-घनघान बुझावै।।८।।

मुनिनाथ। मुनि के नाथ केवली परमात्मा ऐसा कहते हैं। सम्यग्ज्ञान-दर्शन का कितना वजन दिया है ! मूल चीज़ वह है। 'मूलं नास्ति कुतो शाखा' मूलजहाँ सम्यग्दर्शन-ज्ञान नहीं है वहाँ चारित्र, व्रत, तप होता नहीं। सच्चा होता नहीं, झूठा हो उसमें आत्मा का कोई लाभ है नहीं, इसलिये कहते हैं। देखो ! अन्दर सब दृष्टान्त दिये हैं। चित्र किये हैं न पहले चित्र में मुनि ध्यान में बैठे हैं। देखो अन्दर में। ज्ञान उपर लगन लगी है। चिदानन्द... चिदानन्द... चिदानन्द... चिदानन्द... चिदानन्द... विकल्प नहीं, हाँ ! ऐसे चादिनन्द में लौ लगी है, वे शिव

गये। चिदानन्द में लौ लगी है वे वर्तमान में जाते हैं। चिदानन्द में लौ लायेगा वह भविष्य में जायेगा। तीनों बात ली है न ? अर्थात तीनकाल में पन्थ एक है, ऐसा कहते हैं। चौथे काल का पन्थ दूसरा है, पाँचवें काल का दूसरा है और भगवान महाविदेह में बिराजते हैं, महाविदेह में दूसरा कोई धर्म का मार्ग है, ऐसा है नहीं। एक ही मार्ग तीनकाल में है। 'एक होय तीनकाल में परमार्थ का पन्थ।' भरत में भी वही, ऐरावत में भी वह, महाविदेह में भी वही; चौथे काल में भी वही और पाँचवे काल में भी वही। वह कहते हैं। समझ में आया ?

'पूर्वकाल में जो जीव मोक्ष में गये हैं,...' मोक्ष का अर्थ अपना ज्ञानानन्द स्वरूप राग से, पुण्य से भिन्न किया था, वह पूर्ण राग से, अस्थिरता से हटकर स्थिर हो गया, पूर्ण अवस्था प्रकट हो गई, उसका नाम मोक्ष। आत्मा की पूर्ण शुद्धता जो शक्तिरूप में पडी है, वह वर्तमान अवस्था में पर से भिन्न करते-करते पूर्ण निर्मलानन्द अवस्था प्रकट हो जाये, उसका नाम मोक्ष (है)।

मोक्ष कह्यो निज शुद्धता, ते पामे ते पंथ;
समजाव्यो संक्षेप मां, सकल मार्ग निर्ग्रंथ।

'श्रीमद् राजचन्द्र' कहते हैं। 'आत्मसिद्धि' है न 'आत्मसिद्धि' ? 'आत्मसिद्धि' देखी है ? भैया ! एक 'श्रीमद् राजचन्द्र' हुए हैं, यहाँ 'ववाणिया' में हुए हैं। ३३ वर्ष की उम्र में देहछूट गया। सात वर्ष की उम्र में जातिस्मरण था। बाद में आत्मज्ञान प्राप्त किया और बहुत छोटी उम्र में-३३ वर्ष में देह छूट गया। उन्होंने उसमें कहा है। समझ में आया ? तीनकाल में जो कोई मार्ग है, 'एक होय त्रणकाळमां, परमार्थनो पन्थ'। परमार्थ का पन्थ एक है। 'एक होय त्रणकाळमां परमार्थनो पन्थ।' समझ में आया है या नहीं ? भैया ! 'आत्मसिद्धि'।

भगवान ज्ञानानन्द प्रभु, उसमें पुण्य-पाप का विकल्प हो परन्तु उससे हटकर अन्तर में चिदानन्द की ज्योत की एकाग्रता करना, वही करते-करते मुक्ति को पाया है। अनन्तकाल में अनन्त ने मुक्ति पायी तो इस कारण से पायी है। देखो ! भेदविज्ञान आया। **'भेदविज्ञानतः सिद्धाः सिद्धा ये किल केचन'**। समझ में आया ? **'जो जीव मोक्ष में गये हैं, वर्तमान में जा रहे हैं...'** समझ में आया ? अभी महाविदेहक्षेत्र है न ? वहाँ मोक्ष है, यहाँ केवल(ज्ञान)-

मोक्ष नहीं है। सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र अन्तर से भिन्न ऐसा होता है। मोक्ष वर्तमान में यहाँ भरतक्षेत्र में नहीं है, महाविदेह में है। भगवान 'सीमंधर' प्रभु जहाँ बिराजते हैं, वहाँ से आत्मा के ज्ञान में लीन होकर इतना उग्र पुरुषार्थ करते हैं, तो कहते हैं कि, परसे भिन्न होकर ही वहाँ मोक्ष जाते हैं। अभी महाविदेह में से जाते हैं तो ऐसे ही जाते हैं, भूतकाल में भरतक्षेत्र आदि में से गये तो परसे भिन्न करके गये।

'**और भविष्य में जायेंगे...**' अनन्त अनन्त काल में भविष्य में जितने मोक्ष में जायेंगे,... समझ में आया ? '**यह सब सम्यग्ज्ञान की महिमा है...**' आहा..हा... ! '**यह सब सम्यग्ज्ञान की महिमा है...**' आहा..हा... ! इतनी महिमा ! चैतन्यमूर्ति ज्ञान का सूर्य है, उसे पर से भिन्न करना, राग का कर्ता नहीं। राग का पुण्य परिणाम आता है, उसका आत्मा कर्ता नहीं। देह की क्रिया का आत्मा कर्ता नहीं। ऐसा अपना ज्ञान हो तो उसका नाम सम्यग्ज्ञान कहते हैं। ऐसे सम्यग्ज्ञान की महिमा (है)। '**ऐसा (मुनिनाथ) जिनेन्द्रदेव ने कहा है।**' वीतराग परमेश्वर त्रिलोकनाथ परमात्मा ने ऐसा कहा है। 'दौलरामजी' कहते हैं, हम हमारी कल्पना से नहीं कहते हैं। वीतरागदेव अनन्त तीर्थंकर हुए, वर्तमान में बिराजते हैं, भविष्य में होंगे। वे अपने ज्ञान की, स्वरूप की दृष्टि और स्वरूप की रमणता से मुक्त होंगे। ऐसा मुनिनाथ, तीर्थंकरदेव, मुनि के नाथ, जिनेन्द्रदेव ऐसा कहते हैं। दूसरा दूसरे प्रकार से कहे तो भगवान की आज्ञा के अनुसार नहीं है। दूसरा कोई कहे कि, पुण्य करते-करते मुक्ति होगी, शुभभाव करते-करते मुक्ति होगी, सम्यग्दर्शन होगा, वह वीतराग की आज्ञा का वचन है नहीं, वीतराग का मार्ग नहीं है। वीतराग के मार्ग में मुनिनाथ ऐसा कहते हैं। दूसरा (मार्ग) है नहीं। देखो !

अभी तो शरीर की क्रिया से मुक्ति हैं। आहा..हा... ! सचेत शरीर, सचेत शरीर से क्रिया... अरे... ! भगवान ! यह तो जड़ है। उसकी क्रिया से अपने को कल्याण होता है, ऐसा (कोई) कहते हैं। आहा..हा... ! लोगों को समझ नहीं (है)। यहाँ तो कहते हैं, जिनेन्द्रदेव, देह की क्रिया से तो नहीं परन्तु पुण्य के परिणाम से भी मुक्ति होती है, ऐसा नहीं कहते हैं। सम्यग्ज्ञान अन्दर में एकाकार होकर मुक्ति होती है। तीनकाल तीनलोक में ऐसा जिनेन्द्रदेव कहते हैं। ऐसा भव्यजीव को यथार्त समझना चाहिए। (विशेष कहेंगे...)

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव !)